



फरवरी 2019

वर्ष : 2 अंक :5

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



सभी सहकर्मियों एवं सभी पाठकों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभ कामनायें। इस वर्ष भारतीय कृषि विज्ञान परिषद की झांकी “किसान गांधी” को प्रथम पुरुष्कार प्राप्त हुआ। इसके लिए पुनः सभी को बहुत बहुत बधाई। इस वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ रहा है। जनवरी माह के प्रारम्भ में संस्थान के गुवाहाटी केंद्र के सहयोग से आयोजित कार्यशाला में माननीय

श्री नरेंद्र चंद्र देबबर्मा, मत्स्य मंत्री, त्रिपुरा सरकार का भाग लेना तथा माह के अंत में माननीय, श्री बाबुल सुप्रियो, भारी उद्योग और सार्वजनिक उद्यम राज्यमंत्री भारत सरकार, द्वारा संस्थान के द्वारा फरक्का में स्थापित हिल्सा रैंचिंग स्टेशन का उद्घाटन करने से संस्थान में नूतन उर्जा का संचार हुआ है। इस माह जनजातीय उप योजना के अन्तर्गत आयोजित कई कार्यक्रम देश के विभिन्न स्थानों में पर प्रगति पर हैं, जैसे पश्चिम बंगाल के गोसाबा ब्लॉक के कोच्चुखाली एवं आमतोली, गुजरात के कर्जन जलाशय में पिंजरा पालन तथा पैन में मत्स्य पालन के लिये प्रशिक्षण और कर्नाटक के हरंगी जलाशय में पैन में मत्स्य पालन आदि इसी माह डॉ. जे. के. जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्यिकी विज्ञान) ने संस्थान में कैबिन परियोजना के अन्तर्गत मत्स्य और पशु विज्ञान खंड की प्रगति समीक्षा बैठक की और संस्थान के वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन भी किया। संस्थान ने मत्स्यजीवियों और मत्स्य पालकों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण एवं प्रसार कार्यक्रमों का आयोजन किया। आशा है कि इस मासिक पत्रिका द्वारा आप सभी तक संस्थान कि मगत्वपूर्ण जानकारियां समय-समय पर हम प्रस्तुत करते रहेंगे। इसी विचार के साथ पुनः संस्थान कि तरफ से आप सभी को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

विक्रम

मुख्य शोध उपलब्धियां

❖ *सिस्टोपसइंडिकस* (रैप, 1835), जिसे आमतौर पर ओल्ड वुमन ऑक्टोपस के नाम से जाना जाता है, को पहली बार नर्मदा नदी के ज्वारनदमुख क्षेत्र के भाद्रुत में सैम्पलिंग के दौरान देखा गया। इस प्रजाति को दिसंबर, 2018 में बैग नेट (10 मिमी जाल छिद्र) द्वारा मछलियों की पकड़ में देखा गया। इन 17 प्रजातियों की कुल लंबाई 190-320 मिमी के बीच दर्ज की गयी। इन प्रजातियों की अधिकतम लंबाई 325 मिमी और वजन 56.2 ग्राम पाया गया। जबकि बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में इस प्रजाति की अधिकतम लंबाई 600 मिमी दर्ज की गयी है।

❖ संस्थान ने मानसून पश्चात् मत्स्य प्रजाति विविधता, संयोजन संरचना और अलग-अलग मौसम में मछलियों के घनत्व का अध्ययन किया ताकि पालय जलाशय, तेलंगाना में पिंजरे में मछली पालन से उनके संयोजन में होने वाले परिवर्तन का पता लगाया जा सके। अध्ययन अवधि में लगभग 33 मत्स्य प्रजातियों को दर्ज किया गया है जिसमें दो विदेशी प्रजातियां, तिलापिया (*ओरियोक्रोमिस नाइलोटिकस*) और पंगास (*पंगोसिनोडोन हाइपोथेलमस*) थे। इस अध्ययन में यह पता चला है कि पिंजरे के निकटवर्ती स्थानों पर मछलियों का जमाव अधिक होता है तथा पिंजरे में मछली पालन तकनीक मछुआरों के लिये आय का अच्छा स्रोत हो सकती है।

❖ मानसून पश्चात् पिंजरा क्षेत्र के जल एवं मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर इनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य तेलंगाना के पल्यार जलाशय जैसे खुला जलक्षेत्र में पिंजरे में मछली पालन तकनीक का मूल्यांकन करना है। यह देखा गया है कि इस तकनीक से जलाशय की मछलियों पर कोई हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता है।

❖ महाराष्ट्र के चांगदेव विस्तार क्षेत्र में ताप्ती नदी के ऊपरी एवं मध्य भाग में नियमित रूप से व्यावसायिक तौर पर झींगा पालन का सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि अभिगमन करने वाली झींगा प्रजातियों की कुल पकड़ 4 से 10 कि.ग्रा. प्रति दिन प्रति मछुआरा समूह है। ये मछुआरे 2 से 3 के समूह में ताप्ती-पूरना संगम के निकट झींगा पकड़ते हैं। पर इस पकड़ में अधिकतर छोटी झींगा मछलियां जैसे, *मेक्रोब्रेकियम लेमारि लेमारि*, *एम. टीवारी* और *एम. काइनेस* ही होती हैं। पकड़ी गई झींगा मछलियों में से 90% मछलियों को सुखाकर आसपास के बाजारों में 150 से 200 रु. प्रति कि.ग्रा. की दर पर बेचा जाता है।

❖ केरल के अलापुझा जलाशय में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए पेन में मछली पालन तकनीका का प्रदर्शन किया गया। एकत्रित की गई मछलियों के चारों को 3 भागों में

बांटा गया (छोटी मछली : औसत आकार - 15 मि.मी. और औसत भार - 1.46 ग्रा. तथा बड़ी मछली : औसत आकार - 15 मि.मी. और औसत भार - 1.46 ग्रा.)। इन चारों को 5000 मत्स्य चारा प्रति वर्ग मी. तथा 5000 मत्स्य चारा प्रति वर्ग मी. की दर से क्रमशः दो पेन क्षेत्रों में संचयित किया गया। इनकी वार्षिक विकास दर क्रमशः 14.23 मि.मी. प्रति वर्ष और 47.98 मि.मी. प्रति वर्ष आंकी गयी। इस पालन से एक वर्ष के पश्चात् दो टन की फसल प्राप्त हुई तथा आय 30000 रु. प्राप्त हुये।

❖ मछली के आंखों के लेंस में आर्सेनिक संदूषण से होने वाले रोग निदान में हल्दी के उपचारात्मक गुणों का मूल्यांकन किया गया। यह देखा गया कि *लेबियो रोहिता* के अंगुलिकाओं में आर्सेनिक संदूषण के कारण आंखों के लेंस में विकार पैदा हो जाता है। यदि ऐसे में इन मछलियों को हल्दी युक्त आहार दिया जाए तो इस प्रकार की बीमारी को दूर किया जा सकता है।

❖ अक्टूबर 2018 से दिसम्बर 2018 के बीच गंगा नदी के प्रयागराज क्षेत्र में इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों की आवक 3.3 मेट्रिक टन आंकी गयी है। ये कार्प प्रजातियां थीं : *सिरहिनस मृगला* - 61.86 प्रतिशत; *कतला कतला* - 18.92 प्रतिशत; *लेबियो रोहिता* - 13.21 प्रतिशत और *लेबियो कलबसु* - 6.10 प्रतिशत।

❖ तमिलनाडु का मेटुर जलाशय (अवस्थिति - 11°54' उत्तर एवं 77°50' पूर्व) का क्षेत्र 14690 हे. है। इस जलाशय में ईकोपाथ मॉडल का परीक्षण किया गया। संभावित उत्पादन 25639.7 टन प्रति वर्ग कि.मी. प्रति वर्ष तथा नेट उत्पादन 8855.152 टन प्रति वर्ग कि.मी. प्रति वर्ष पाया गया। अध्ययन में यह देखा गया कि इस जलाशय की पारिस्थितिकी अधिक उत्पादन के लिये परिपक्व नहीं है और ऐसे में किसी भी खतरे का सामना करने में सक्षम नहीं है।

❖ अर्जुन वृक्ष की छाल (30±2.5) से निकाले गए महीन सत्व जीवणुओं से उत्पन्न होने वाली बिमारियों का प्रतिरोध किया जा सकता है।

❖ पश्चिम बंगाल के भागीरथी-हुगली विस्तार क्षेत्र में विदेशी प्रजाति, *वर्मीकुलेटेड सेल्फिन कैटफिश डक्स* दर्ज की गयी है इस प्रजाति की उपलब्धता फरक्का लैंडिंग केंद्र से प्राप्त कुल आवक का 10 प्रतिशत आंका गया है जो देशी प्रजातियों की उत्तरजीविता के लिए खतरा पैदा कर सकती हैं अतः इस विषय में उपयुक्त कदम शीघ्र अपनाया जाना चाहिए।

❖ अरुणाचल प्रदेश के लोहित, रंगा, कुरुंग और दिबांग नदियों में भू-सांख्यिकी मॉडल द्वारा प्रजाति सघनता का आंकलन किया गया। प्राप्त मानचित्रों से स्थान विशेष मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण सम्बन्धी तकनीकों और उपायों का विकास किया जा सकता है

अगरतला, त्रिपुरा में बड़े जल निकायों में मत्स्य उत्पादन में सुधार के लिए भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा कार्यशाला का आयोजन

भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, ने मत्स्य निदेशालय, मत्स्य विभाग त्रिपुरा, के सहयोग से खुले जल मात्स्यिकी के प्रबंधन पर अगरतला में एक विचार विमर्श और आदान प्रदान कार्यशाला का आयोजन दिनांक 4-5 जनवरी, 2019 के दौरान



किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य देश के जलाशयों और आद्रक्षेत्रों, विशेष रूप से जलाशयों के प्रबंधन और विस्तार में भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निरंतर किये जा रहे कार्यों और उपलब्धि को साझा करना था। त्रिपुरा राज्य में इसी तरह की गतिविधियों को लागू करने के लिए योजनाबद्ध का रूप रेखा तैयार करने को भी प्राथमिकता दी गई। जिसमें प्रमुख ध्यान डंबूर जलाशय, बड़ी झीलों, बैराज, दलदली क्षेत्रों और मछली उत्पादन में सुधार के लिए सरल और कम लागत वाली तकनीकों (जैसे पेन और केज एक्वाकल्चर) और दिशानिर्देशों (फिश स्टॉक एन्हांसमेंट) पर था।

मुख्य अतिथि माननीय श्री नरेंद्र चंद्र देबबर्मा, मत्स्य मंत्री, त्रिपुरा



सरकार ने उद्घाटन सत्र के दौरान लोगों से कहा कि त्रिपुरा के लोग ज्यादातर मछली खाने वाले हैं, जो मत्स्य क्षेत्र के लिए फायदेमंद है। उन्होंने भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान से प्राकृतिक जल स्रोतों में मछली उत्पादन को बेहतर बनाने में हस्तक्षेप करने की मांग की ताकि बड़े पैमाने पर आम लोगों को इसका लाभ मिल सके।

इससे पहले डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और कार्यशाला के संयोजक, ने गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिनिधियों का स्वागत किया जिनमें 40 प्रतिभागियों में मत्स्य पालन के उप निदेशक, मत्स्यपालन के अधीक्षक, मत्स्य विभाग के मत्स्य अधिकारी, त्रिपुरा सरकार, मत्स्य



विभाग के प्रोफेसर, नेहरू क्षेत्र, त्रिपुरा केंद्र के लिए भाकृअनुप के क्षेत्रीय केंद्र लिम्बुचेरा के वैज्ञानिक शामिल थे। डॉ. दास ने भारतीय प्रमुख और विदेशी कार्प के बीज उत्पादन में त्रिपुरा के आत्मनिर्भर होने के बारे में अपनी खुशी व्यक्त की, लेकिन जोर दिया कि मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार अब स्थानीय वरीयता वाली विविध मछली प्रजातियों के बीज उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करें। उन्होंने त्रिपुरा राज्य में खुले जल मात्स्यिकी के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकी के संदर्भ में सभी तरह की मदद का आश्वासन भी दिया।

श्री जी.आर. दास, टीसीएस, निदेशक, मत्स्य विभाग त्रिपुरा सरकार और कार्यशाला के संयुक्त संयोजक ने भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के वैज्ञानिकों का स्वागत करते हुए, अपनी चिंता व्यक्त की कि त्रिपुरा के धान के खेतों में एक समय में प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले कई छोटी पौष्टिक और स्वादिष्ट मछलियां अब उपलब्ध नहीं हैं।

कार्यशाला के पहले तकनीकी सत्र में, डॉ. बसन्त कुमार दास ने भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर

द्वारा भारत के जल के प्रबंधन पर चर्चा की; प्रो. ए.बी. पटेल, एकाकल्चर के प्रमुख, कॉलेज ऑफ फिशरीज, लेम्बुचेर्रा ने त्रिपुरा राज्य में उपलब्ध गैर-पारंपरिक फीड संसाधनों पर चर्चा की, जिनको महंगी सामग्री के बदले में मछली फीड में शामिल किया जा सकता है और जिससे फीड लागत को कम किया जा सकता है; डॉ. एम.के. दत्ता, सहायक प्रोफेसर और प्रमुख, एफआरएम विभाग, सीओएफ, लेम्बुचेर्रा ने खुले जल में मत्स्य पालन के अलावा भी कुछ मुद्दों पर बात की, जिन्हें सहयोगी रूप से संबोधित किया जाना चाहिए और डॉ. दीपेश देबनाथ, वैज्ञानिक, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने अलग-अलग उत्तर पूर्वी राज्यों में किए गए पिंजरे मत्स्य पालन प्रदर्शनों और प्रयोगों पर चर्चा की



जिनको त्रिपुरा राज्य में दोहराया जा सकता है।

दूसरे तकनीकी सत्र में, डॉ. ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने भारत के विभिन्न जलाशयों और आद्राक्षेत्रों में पिंजरे जलीय कृषि में अपने विशाल अनुभवों को साझा किया; श्री रामानुज चक्रवर्ती, मत्स्य अधिकारी, मत्स्य निदेशालय, त्रिपुरा सरकार ने त्रिपुरा के खुले पानी के मत्स्य संसाधनों की स्थिति प्रस्तुत की; श्री बप्पी बसेसर, मत्स्य अधिकारी, मत्स्य निदेशालय, त्रिपुरा सरकार ने विभिन्न केंद्र प्रायोजित योजनाएं को प्रस्तुत किया जो त्रिपुरा में खुले जल मात्स्यिकी के विकास के लिए योजनाबद्ध तरीके से अपनाई गई हैं; और डॉ. सोना येंगकोकपम, वैज्ञानिक, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने विभिन्न उत्तर पूर्वी राज्यों में किए गए पेन मत्स्य पालन प्रदर्शनों और प्रयोगों पर चर्चा की, जो आर्थिक व्यवहार्यता के संदर्भ में सफल साबित हुई।

विचार विमर्श सत्र में, श्री रामेश्वर दास, आईएफएस, सचिव (मत्स्य), त्रिपुरा सरकार, ने त्रिपुरा में पिंजरा जलीय कृषि अभ्यास को सफल बनाने के लिए वैज्ञानिकों और विभागीय अधिकारियों को गहन चिंतन करने का आग्रह किया क्योंकि यह भारत के अन्य राज्यों में है। प्रतिभागियों द्वारा भी कई सुझाव दिए गए जिसमें, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर की टीम ने त्रिपुरा के खुले जल संसाधनों में वैज्ञानिक उपायों द्वारा संचयन से स्टॉक बढ़ाने और प्रौद्योगिकियों के माध्यम से मत्स्य पालन के विकास के लिए मत्स्य निदेशालय को सभी तकनीकी मार्गदर्शन का आश्वासन दिया था।

हालांकि, त्रिपुरा के जलाशयों / आद्राक्षेत्रों / झीलों से मछली उत्पादन बढ़ाने की दिशा में नियोजित गतिविधियों के उचित कार्यान्वयन के लिए भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और मत्स्य निदेशालय त्रिपुरा सरकार के बीच समन्वय होना चाहिए।

नहर मछली पालन के माध्यम से अमतोली, (सुंदरबन) की आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने जनजातीय उप योजना (टीएसपी) कार्यक्रम के तहत 05.01.2019 को सुंदरबन के गोसाबा ब्लॉक के अमतोली में एक बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाया। पश्चिम बंगाल के सुंदरबन क्षेत्र में नहरों की विशाल श्रृंखला है, जिनमें मत्स्य विकास की भारी संभावनाएँ हैं। सुंदरबन क्षेत्र में 130 मछली प्रजातियाँ पायी जाती है और धीरे-धीरे



जागरूकता की कमी और प्राकृतिक संसाधनों के भारी दोहन के कारण प्रजातियों की विविधता कम हो रही है। इस राज्य में प्रत्येक घर के पिछवाड़े में एक न एक तालाब होता है। इसके अलावा प्रत्येक क्षेत्र में



खेतों में सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण किया जाता है। इन नहरों को आजीविका और जैव विविधता संरक्षण के लिए उपयोग किया जा सकता है। इस क्षेत्र में ज्यादातर आदिवासी मछुआरे अपनी आजीविका के लिए इन जलीय संसाधनों पर निर्भर करते हैं। इसलिए, इस क्षेत्र में वैज्ञानिक और रणनीतिक हस्तक्षेपों की आवश्यकता को महसूस करते हुए, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने जन जागरूकता अभियान की व्यवस्था करने के लिए पहल की। कार्यक्रम में स्थानीय लोगों के

प्रतिनिधि के साथ लगभग 300 मछुआरों ने भाग लिया। उन्होंने कुशल प्रबंधन प्रथाओं के माध्यम से स्वदेशी मछली प्रजातियों के संरक्षण के महत्व पर जोर दिया और संसाधन उपयोग दक्षता बढ़ाने के लिए मत्स्य विकास के लिए सामूहिक दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी। उन्होंने छोटी देसी मछलियों के महत्व और मानव पोषण में उनकी भूमिका पर भी बात की और मछुआरों को बेहतर मत्स्य प्रबंधन के लिए अपने ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में आने के लिए आमंत्रित किया। डॉ. यू. के. सरकार, प्रमुख, जलाशय एवं आद्रछेत्र मात्स्यिकी विभाग, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने आदिवासी मछुआरों को संबोधित करते हुए कहा कि बाजार में बेहतर लाभ के



लिए व्यापार के अवसरों और कुशल आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन होना चाहियें। वैज्ञानिकों और मछुआरों के बीच एक विचार आदान प्रदान सत्र आयोजित किया गया था, जहाँ वैज्ञानिकों द्वारा मछुआरों के विभिन्न प्रश्नों को स्पष्ट किया गया था। डॉ. पी.के.परिदा और सुश्री सुकन्या सोम ने कार्यक्रम का संयोजन किया। कार्यक्रम के अंत में आदिवासी मछुआरों और स्थानीय जनता की सक्रिय भागीदारी में एक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। दैनिक जीवन में स्वच्छता और उस के महत्व के बारे में महिला प्रतिभागियों को जागरूक किया गया। यह कार्यक्रम सुंदरबन डीम के साथ समन्वित किया गया था। इसमें स्थानीय पंचायत और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया और मत्स्य पालन में विकास के लिए आदिवासी मछुआरों को प्रेरित किया।

नहर में मत्स्य पालन विकास के लिए सुंदरबन की महिलाओं के लिए जागरूकता शिविर

भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत स्थानीय स्वेच्छा सेवी संस्थान "सुंदरबन डीम" के सहयोग से 6 जनवरी, 2019 को सुंदरबन, पश्चिम बंगाल के गोसाबा ब्लॉक के कोचुखाली में एक बड़े पैमाने पर जागरूकता शिविर का आयोजन किया। कोचुखाली सुंदरबन का सबसे छोटा द्वीप है जो यहाँ के दुर्गम क्षेत्र में से एक है। जन जागरूकता कार्यक्रम में 250 से अधिक आदिवासी महिलाओं ने भाग लिया। सुंदरबन क्षेत्र में लगभग 130 मछलियों की प्रजातियाँ हैं जो लोगो बीच जागरूकता की कमी और प्राकृतिक संसाधनों के भारी दोहन के कारण अपनी विविधता खो रही है। प्रत्येक क्षेत्र की खेती में सिंचाई के उद्देश्यों

के लिए नहरों का निर्माण किया जाता है। इन नहरों को आजीविका सुधार और जैव विविधता संरक्षण के लिए भी काम में लाया जा सकता है। इस क्षेत्र में आदिवासी मछुआरें ज्यादातर अपनी आजीविका के लिए इन जलीय संसाधनों पर ही निर्भर करते हैं। भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने महिलाओं को समूह बनाने और उत्पादन वृद्धि के लिए सुंदरबन की अप्रयुक्त नहरों में मत्स्य पालन शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने मछली की विविधता के संरक्षण और लोगो के पोषण के लिए लघु स्वदेशी मछलियों के महत्व पर भी जोर दिया और मत्स्य विकास के बारे में मछुआरों के प्रश्नों को भाकृअनुप केंद्रीय



अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के वैज्ञानिकों द्वारा स्पष्ट किया गया। गाँव के सड़क संचार, सामाजिक संरचना, संसाधन उपलब्धता मानचित्र तैयार किए गए और प्रशिक्षण की ज़रूरतों का आकलन किया गया तदनुसार, क्षेत्र में समग्र आजीविका विकास के लिए कोलकाता के आसपास अन्य भाकृअनुप संस्थानों के साथ काम करने की योजना बनाई गई। डॉ. यू. के. सरकार, प्रमुख, जलाशय एवं



आद्रछेत्र मात्स्यिकी विभाग, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने आदिवासी मछुआरों को संबोधित किया और बेहतर लाभ लाने के लिए सही अवसरों और कुशल आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन पर जोर दिया। कार्यक्रम के अंत में आदिवासी मछुआरों और स्थानीय जनता के सक्रिय भागीदारी के साथ एक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। दैनिक जीवन में स्वच्छता और उसके के महत्व के बारे में महिला प्रतिभागियों को जागरूक किया गया। संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. पी.के.परिदा और सुश्री सोम ने कार्यक्रम को संयोजन किया।

संस्थान में गणतंत्र दिवस का आयोजन



दिनांक 26 जनवरी, 2019 को संस्थान में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन बहुत धूम धाम से किया गया। इस अवसर पर पूरे संस्थान को तिरंगे से सजाया गया। सर्व प्रथम निदेशक महोदय ने राष्ट्रध्वज को सम्मान सहित फहराया। राष्ट्रगान के उपरान्त निदेशक ने गणतंत्र दिवस के उद्बोधन में देश के स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद किया और कहा कि हमें शहीदों के बलिदानों को याद कर के देश को प्रगति के पथ पर तेजी से आगे ले जाने का संकल्प लेना चाहिये। निदेशक ने संस्थान के पूर्व वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों को भी याद किया और कहा कि किन कठिन परिस्थितियों में इस संस्थान के वैज्ञानिकों ने सफल अनुसंधान किये। इस अवसर पर पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. उत्पल भौमिक विशेष अतिथि थे। निदेशक महोदय ने इस अवसर पर संस्थान द्वारा गत वर्ष किये गये कार्यों का लेखा जोखा दिया। निदेशक महोदय ने इस वर्ष जिन वैज्ञानिकों ने अलग जगहों से पुरस्कार, सम्मान आदि प्राप्त किये उनकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि सभी कर्मचारियों को संस्थान निर्माण में बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिए और पदों के अनुसार अच्छे से अच्छा कार्य करना चाहिए जिससे सबको संस्थान पर गर्व हो। महोदय ने बगीचे के माली एवं बगीचे से सम्बन्धित अधिकारियों की बगीचे के रख रखाव की तारीफ की। निदेशक महोदय ने वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा किये गये कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। निदेशक महोदय ने समस्त कर्मचारियों, अधिकारियों छात्रों एवं वैज्ञानिकों से अपील की, कि सभी लोग मिल कर संस्थान के लिए कार्य करें और संस्थान को और भी उचाइयों पर ले जायें।

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर एक प्रश्नोत्तरी और संस्थान के 70 वर्षों के

इतिहास पर एक चर्चा सत्र का आयोजन किया गया था। गणतंत्र दिवस के अवसर पर इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार दिये गये। डॉ. अरुण पंडित, प्रधान वैज्ञानिक के दल, जिसमें डॉ. ध्रुवज्योति सरकार वैज्ञानिक, कान्सियल जोन्सन वैज्ञानिक, श्री एस के पॉल, तकनीकी अधिकारी, श्री अविषेक साहा, तकनीकी सहायक एव, मनीषा भोर शोध छात्रा थे, ने प्रथम पुरुष्कार प्राप्त किया। डॉ. रंजन कुमार मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक के दल ने द्वितीय एवं डॉ. श्रीकान्त समान्त, प्रधान वैज्ञानिक के दल ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। अंत में आस पास के गरीब एवं स्कूली बच्चों को मिष्ठान वितरण किया गया। सभी कर्मचारियों के मनोरंजन के लिए कृष्णा बगीचे में म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इसमें संस्थान के समस्त कर्मचारियों ने बहुत उत्साह से भाग लिया। इस प्रतियोगिता का संचालन श्री राजीव लाल मुख्य, प्रशासनिक अधिकारी ने किया। इसके उपरान्त निदेशक महोदय ने संस्थान के सभी सदस्यों को मिष्ठान दिया और अंत में दो दलों के मध्य वालीबाल की मित्रता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें एक दल के कप्तान डॉ. बिजय कुमार बेहरा और दूसरे दल के कप्तान डॉ. अरुण पंडित, प्रधान वैज्ञानिक थे।



गणतंत्र दिवस पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की झांकी को प्रथम पुरस्कार



भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को नई दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड - 2019 में अपनी झांकी, 'किसान गांधी' के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 28 जनवरी, 2019 को रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की टीम को यह पुरस्कार सौंपा।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की झांकी ने ग्रामीण समृद्धि के लिए डेयरी फार्मिंग, स्वदेशी नस्लों और पशुधन आधारित जैविक कृषि के महत्व को प्रदर्शित किया था।

परिषद की झांकी "किसान गांधी" में ग्रामीण समुदायों की समृद्धि के लिए कृषि और पशुधन को बेहतर बनाने के लिए गांधीजी के दृष्टिकोण को चित्रित किया। गांधीजी ने अधिक जानकारी हासिल करने के लिए, उन्होंने 1927 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के बंगलोर केंद्र - राष्ट्रीय डेयरी

अनुसंधान संस्थान में पंद्रह दिनों के लिए डेयरी फार्मिंग के एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने 1935 में इंदौर के इंस्टीट्यूट ऑफ प्लांट इंडस्ट्री में खाद बनाने की 'इंदौर विधि' को भी देखा और उसकी सराहना की।



गांधीवादी दर्शन में बेहतर स्वास्थ्य के लिए स्वदेशी नस्लों, जैविक कृषि और बकरी के दूध को बढ़ावा देना शामिल था। गांधी जी के सपने को साकार करने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद किसानों की आजीविका की सुरक्षा और उच्च आय सुनिश्चित करने के लिए भारतीय कृषि को बदलने की दिशा में अथक प्रयास कर रहा है। अत्याधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास और तैनाती से, भारत खाद्य आत्मनिर्भरता हासिल करने में सफल रहा है और दुनिया में सबसे ज्यादा दूध और कपास उत्पादक बना हुआ है।

झांकी में बापू को बकरियों और एक गाय के साथ दिखाया गया था। जैविक कृषि, कपास और दुग्ध उत्पादन में क्रांति और बेहतर स्वास्थ्य के लिए खाद्य सुरक्षा विश्लेषण भी दिखाए गए। कस्तूरबा गांधी को चरखे के साथ और बापू कुटी में जानवरों की देखभाल करते हुए दिखाया गया था। यह पशुधन आधारित टिकाऊ और जलवायु परक कृषि का प्रतीक है।

70 वें गणतंत्र दिवस परेड के दौरान राजपथ पर प्रदर्शित 22 झांकी में राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की 16, विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों के छह झांकी शामिल थीं।

प्रौद्योगिकी विकास और भागीदारी अनुसंधान की तरफ संस्थान के प्रयास

भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास के लिए एक प्रतिष्ठित संस्थान है, जो लाखों मछुआरों को आजीविका सुरक्षा प्रदान करता है। पिंजरा पालन संस्थान के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक है। संस्थान ने पिंजरा पालन में क्रांति लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और पूरे देश में पिंजरा पालन तकनीक को सफलतापूर्वक पहुँचाया है। पिछले 3-4 वर्षों में, भारत के विभिन्न राज्यों के जलाशयों में पिंजरे की संस्कृति में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के अंतरिम अनुमान से पता चलता है कि देश के विभिन्न जलाशयों में पूरे भारत में 14000 से अधिक पिंजरे लगाए गए हैं। ओडिशा और झारखंड के पूर्वी क्षेत्रों में कुल पिंजरों का लगभग 43% योगदान है। गुजरात, महाराष्ट्र और गोवा के पश्चिमी क्षेत्र में लगभग 33% पिंजरों का योगदान है। जलाशयों में केज कल्चर कार्यान्वयन से मत्स्य पालकों का सामाजिक आर्थिक विकास हुआ है और विशेष रूप से बांधों के निर्माण से विस्थापित हुए मछुआरों की आजीविका में सुधार आया है।

भारत में पिंजरा पालन के लिए पंगेसियस (*पंगेसियनोडोन हाइपोफथाल्मस*) सबसे पसंदीदा प्रजाति है। हालांकि, गुणवत्ता वाले मछली के बीज की समय पर उपलब्धता पंगेसियस पिंजरा किसानों के सामने एक बड़ी चुनौती है, जो पिंजरे पालन में परिवहन मृत्यु दर और बीमारी के प्रकोप की ओर अग्रसर है। इस मुद्दे को हल करने के लिए, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के प्रगतिशील मछली बीज उत्पादकों और आपूर्तिकर्ताओं की पहचान करने और उद्यमियों को गुणवत्ता वाले बीज उत्पादन में उद्यम करने की सुविधा की ओर प्रेरित करने की प्रक्रिया लगातार कर रहा है।

इस संबंध में, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक ने वैज्ञानिकों की एक टीम के साथ 9 जनवरी 2019 को उत्तर चौबिस परगना पश्चिम बंगाल के सिबदासपुर के श्री बाबलु मुजुमदार के जलीय छेत्रों का दौरा किया। इस यात्रा का उद्देश्य श्री मुजुमदार के साथ सामनजस्य स्थापित करना था और गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन, पेन, केज प्रथाओं में भागीदारी में अनुसंधान और संसाधन विकास के लिए नए रास्ते स्थापित करने के लिए।

श्री बाबलु मुजुमदार भारत के अग्रणी मछली कृषकों में से एक हैं। वर्षों की कड़ी मेहनत, सीखने, व्यापार की प्रवृत्ति पर अनुभव के माध्यम से, वह एक कुशल मछली किसान बन गए हैं। वह एक सफल मछली बीज उत्पादक भी हैं। विभिन्न मत्स्य विश्वविद्यालयों ने छात्रों के साथ मछली संस्कृति में अपने



श्री बाबलु मुजुमदार

जान और अनुभव को साझा करने के लिए उन्हें आमंत्रित किया जाता है। वह विभिन्न मत्स्य विश्वविद्यालयों, मत्स्य निदेशालय, पश्चिम बंगाल और आईसीएआर संस्थानों जैसे भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और भाकृअनुप-केंद्रीय मीठा जल जीवपालन संस्थान कई पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता हैं। वह पिंजरा मत्स्य पालन प्रणाली में नई मछली प्रजातियों को पेश करने में भी प्रगतिशील है। वह एक प्रतिष्ठित पंगेसियस ब्रीडर है। उन्होंने पाबदा (*ओमपोक पाबदा*) जैसी कुछ अन्य कीमती मछली प्रजातियों के बीज उत्पादन में भी सफलता प्राप्त की है। एक सफल मत्स्यपालन उद्यमी होने के नाते, वह अब मछली प्रजनन और कल्चर में शुरुआती लोगों को प्रेरित करने और प्रशिक्षित करने के लिए तैयार है। निदेशक के साथ बातचीत करते हुए, श्री मुजुमदार ने अफ्रीकी कैटफिश पर अपनी चिंताओं को व्यक्त किया, जो पश्चिम बंगाल में और उसके आसपास कानूनी रूप से प्रतिबंधित हैं। उनके विचार में, राज्य के मत्स्य पालन विभागों को बिजली पर सब्सिडी का विस्तार

नहीं करना चाहिए, और अन्य आवश्यक आदानों जैसे कि फ्रीड, उर्वरक इत्यादि अफ्रीकी कैटफिश की खेती करने वाले किसानों को नहीं देना चाहिए। उन्होंने क्षेत्र के हित में पंगेसियस प्रजनन और कल्चर पर साथी किसानों को शिक्षित करने और प्रशिक्षण प्रदान करने में भी अपनी गहरी रुचि दिखाई। श्री मुजुमदार जैसे प्रगतिशील किसानों की भागीदारी और रुचि के साक्षी भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने कहा कि उनके जैसे प्रगतिशील किसान पीपीपी मोड में एकाकल्चर विकसित करने में सहायता कर सकते हैं।

श्री मुजुमदार को यह भी लगता है कि किसानों और प्रशिक्षुओं को ब्रूडस्टॉक उठाने, प्रजनन और हैचरी प्रबंधन, नर्सरी और कल्चर से परिवहन और विपणन कौशल में मदद करने के लिए उन्हें सफल उद्यमी बनने के लिए मछली संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। उन्होंने उचित समय पर और बाजार की मांग के आधार पर सही आकार में मछली के विपणन पर जोर दिया। उनके अनुभव में, इस तरह के लाभ को काफी बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने ग्रामीण युवकों के रोजगार के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और जलीय कृषि की आवश्यकता पर आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों पर जोर दिया। उन्होंने भाकृअनुप संस्थानों और राज्य मत्स्य विभाग के साथ प्रौद्योगिकी संसाधनों को प्रांतीय भाषा में उपलब्ध कराने पर जोर दिया और यह भी विचार व्यक्त किया कि राष्ट्रीय मछली किसान दिवस, विश्व मत्स्य दिवस, वेटलैंड दिवस इत्यादि जैसे विशेष दिनों में अधिक मछली किसानों / मछुआरों को संवेदनशील और प्रेरित किया जाना चाहिये, इस प्रकार के दिवस किसानों के क्षेत्र में मनाया जाना चाहिए। भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के टीम ने उनके जलीय छेत्रों में चल रही विभिन्न गतिविधियों को देखा और भविष्य में विभिन्न अनुसंधान और विकासगत गतिविधियों के सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा की।

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के इतिहास पर एक व्यापक सत्र

इस वर्ष गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के 70 वर्षों के इतिहास पर चर्चा करने के लिए एक विशेष सत्र बुलाया गया। इसका मुख्य उद्देश्य संस्थान के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को खासकर नए सदस्यों को, संस्थान की विरासत के बारे में अवगत कराना और उसके ऐतिहासिक पहलू की जानकारी देना था। डॉ. बसन्त कुमार दास निदेशक, के मार्गदर्शन में 70 वर्षों के इतिहास पर चर्चा के लिए 7 दलों का चुनाव किया गया और यह भी निर्णय लिया गया कि जो दल अपने दशक को बहुत प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करेगा उस दल को



तकनीकी अधिकारी, श्री अविषेक साहा, तकनीकी 1958 से 1967 के दौरान संस्थान में किये गये



अधिकारी, सुश्री संगीता चक्रोबोर्ती, तकनीकी सहायक, सुश्री देबलिना साधुखान, शोध छात्र ने सन 1978 से 1987 के दौरान संस्थान में किये गये विकास कार्यों पर चर्चा की। पाचवें दल के डॉ. रंजन कुमार मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक ने अपने दल के अन्य सदस्यों श्री मितेश रामटेके, वैज्ञानिक, सुश्री



निरुपदा चानु, वैज्ञानिक, डॉ. एस. के. एस. एस. हामीद तकनीकी अधिकारी, श्री कौसिक मण्डल, तकनीकी सहायक, सुश्री सुप्रीति बाएं, शोध छात्र ने सन 1988 से 1997 के

दौरान संस्थान में किये गये कार्यों पर चर्चा की। छठवें दल के डॉ. सुबीर कुमार नाग, प्रधान वैज्ञानिक ने अपने दल के अन्य सदस्यों श्री सतीश कौशलेश, वैज्ञानिक, सुश्री सुकन्या सोम, वैज्ञानिक, डॉ. संजय भौमिक, तकनीकी अधिकारी, श्री अन्जोन कुमार तालुक्देर, तकनीकी सहायक, सुश्री बन्दना दास घोष, शोध छात्रा



श्रेया भट्टाचार्य, शोध छात्रा थे इस दल ने सन 2008 से 2018 के दौरान संस्थान में किये गये कार्यों पर चर्चा की। इस सत्र के दौरान निर्णायक मण्डल एवं सभागार में उपस्थित श्रोताओं ने अपनी जिज्ञासाओं को भी शांत किया। इस सत्र की निर्णायक मण्डल और सभागार में उपस्थित श्रोताओं ने काफी प्रशंसा की सभा के अंत में आयोजक मण्डल की तरफ से धन्यवाद ज्ञापन दिया।

पुरस्कारों से सम्मानित किया जायगा और इसके लिए एक निर्णायक मण्डल का गठन किया गया। संस्थान के पूर्व प्रधान वीज्ञानिक डॉ. उत्पल भौमिक, डॉ. बंकिम चन्द्र झा एवं डॉ. डी. के. डे. को इस निर्णायक मण्डल का सदस्य चुना गया। सर्वप्रथम डॉ. श्रीकांत समान्त, प्रधान वैज्ञानिक ने अपने दल के अन्य सदस्यों डॉ. सोमा दास सरकार, वैज्ञानिक, श्री श्रवण कुमार शर्मा, वैज्ञानिक, श्रीमती अभीजिता सेनगुप्ता, तकनीकी अधिकारी, सुश्री अकिता घोष, अवर श्रेणी लिपिक एवं अर्चिसमन राँय, शोध छात्र थे। इस दल ने सन 1947 से 1957 के दौरान संस्थान में किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला। दूसरे दल में डॉ. अरुण पंडित, प्रधान वैज्ञानिक ने अपने दल के अन्य सदस्यों डॉ. ध्रुवज्योति सरकार वैज्ञानिक, कान्सियल जोन्सन वैज्ञानिक, श्री एस के पॉल, सहायक एवं मनीषा भोर, शोध छात्रा ने सन कार्यों से अवगत कराया। तीसरे दल के डॉ. मोहम्मद अफताबुद्दीन प्रधान वैज्ञानिक, ने अपने दल के अन्य सदस्यों सुश्री चायना जाना, वैज्ञानिक, श्री रोषिथ सी.एम., वैज्ञानिक, सुश्री सद्गुपा भौमिक, तकनीकी सहायक, श्री देवाशीष आचार्या, अवर श्रेणी लिपिक, श्री शुभदीप दासगुप्ता, शोध छात्र ने सन 1968 से 1977 के दौरान संस्थान में किये गये शोधों पर चर्चा की। चौथे दल के डॉ. संजीव कुमार मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक ने अपने दल के अन्य सदस्यों डॉ. प्रणय कुमार परीदा, वैज्ञानिक, सुश्री तनुजा अब्दुल्लाह, वैज्ञानिक, श्री सुदर्शन बंदोपाध्याय तकनीकी



जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत पिंजरे और पेन कल्चर का गुजरात के कर्जन जलाशय में प्रदर्शन

भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के वड़ोदरा क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र ने 6 जनवरी, 2019 को जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत नर्मदा जिले के मोवी और बोरीदरा गांव के आदिवासी मछुआरों के लिए कर्जन जलाशय में अचुलिकाओं विकसित करने के लिए पिंजरे और पेन कल्चर पर सफलतापूर्वक प्रदर्शन कार्यक्रम



का आयोजन किया। प्रदर्शन के दौरान, भारतीय मुख्य कार्प के बड़े आकार के बीजो को 0.2 हेक्टेयर सीआईएफआरआई एचडीपीई पेन और चार पिंजरो में रखा गया था। कर्जन जलाशय में स्थापित पेन संरचना गुजरात में अपनी तरह का पहला केंद्र है। पिंजरे और पेन का उपयोग मत्स्य जीरो से अचुलिकाओं तक उठाने के लिए किया जाएगा और एक बार जब वे 100-110 मिमी के आसपास अचुलिकाओं के आकार को प्राप्त कर लेंगे, तो उन्हें कर्जन जलाशय में संचयन सामग्री के



रूप में उपयोग किया जाएगा। संचयन की जाने वाली प्रजातियां कैटला कैटला, लेबीओ रोहिता और सिरहिनस मृगला थीं। मछुआरों को पिंजरे और पेन मत्स्य पालन में संचयन प्रबंधन का प्रदर्शन किया गया, जो मत्स्य बीज के परिवहन से शुरू हुआ, मत्स्य के बीज के वायुजलानुकूलन से उनकी रिहाई तक। उन्हें अचुलिकाओं को विकसित करने के लिए पिंजरे और पेन कल्चर में भोजन, पानी की गुणवत्ता और स्वास्थ्य प्रबंधन के बारे में भी जागरूक किया गया। प्रदर्शन कार्यक्रम में सहकारी समिति के पचास आदिवासी मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम को डॉ. एस.पी. कांबले, डॉ.डी.भक्त, श्री डब्लू ए. मीटी और श्री वैसाख जी वैज्ञानिकों की सक्रिय भागीदारी से; और श्री आर.साह, श्री जे.के.सोलंकी और श्री

आर.प्रसाद तकनीकी अधिकारी और श्री सी.डी. परमारवास प्रशासनिक कर्मचारियों की मदद से सफल बनाया गया।

शेखपुरा, बिहार के प्रशिक्षु मछुआरों को उपमहा निदेशक (मात्स्य विज्ञान) के द्वारा प्रोत्साहन

बिहार के शेखपुरा जिले के किसानों के लिए सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में 5 से 11 जनवरी, 2019 तक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कुल 31 मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने उत्पादन



वृद्धि और आय सृजन क्षमताओं के माध्यम से अपनी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर, किसानों के कौशल विकास की जरूरतों पर जोर दिया। प्रशिक्षण मॉड्यूल को किसानों के साथ बातचीत करने और पिछले बैचों से प्राप्त प्रतिक्रिया के बाद तैयार किया गया था, जिसे तदनुसार सुधारा गया था। शेखपुरा जिले में, बहुत सारे जल संसाधन हैं जो अगर सही तरीके से उपयोग किए जाएं तो किसानों की आजीविका में सुधार ला सकते हैं। तो, इस जिले में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास के



माध्यम से आजीविका में सुधार की पर्याप्त गुंजाइश है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के अंतर को कम करने का लक्ष्य रखा। कार्यक्रम में मछली पालन प्रबंधन, रोग प्रबंधन, मृदा और जल

रसायन प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन, मिश्रित मछली पालन, सजावटी मछली पालन, केज कल्चर, मात्स्यिकी का आर्थिक मूल्यांकन आदि विषय शामिल थे। यह पिंजर पालन कार्यक्रम कक्षा सत्रों के अलावा ऑन-फील्ड एक्सपोजर विजिट और फ्रील्ड प्रदर्शनों के माध्यम से तालाबों और टैंकों सहित खुले पानी में मछली उत्पादन को बढ़ाने के लिए किसानों के व्यावहारिक कौशल को बढ़ाने के लिए उन्मुख किया गया है। माननीय डॉ. जे. के. जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भाकृअनुप समापन सत्र के अतिथि रहे। डॉ. जेना ने किसानों से आग्रह किया कि वे उत्पादक फसल के खेतों को तालाबों में परिवर्तित न करें। बल्कि बंजर भूमि का उपयोग मत्स्यपालन के लिए करें। उन्होंने प्रशिक्षु किसानों को सलाह दी कि वे प्रशिक्षण अवधि में प्राप्त ज्ञान का उपयोग निरंतर तरीके से अपनी आजीविका कमाने के लिए करें। उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त सफल प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किए और कामना की कि भविष्य में भी वे भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और ऐसे अन्य संस्थानों में आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते रहेंगे। संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने कार्यक्रम में उपमहानिदेशक का सम्मान किया और कहा कि सम्माननीय अतिथि के प्रोत्साहन रूपी ज्ञान प्रशिक्षुओं के भविष्य के प्रयासों में स्थायी प्रभाव डालेंगे।

कैबिन परियोजना के मत्स्य और पशु विज्ञान खंड की समीक्षा बैठक

कैबिन परियोजना प्रगति समीक्षा बैठक 10-11 जनवरी, 2019 के दौरान भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में आयोजित की गई थी। डॉ. जे.के.जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्य विज्ञान और पशु विज्ञान), ने कैबिन परियोजना के मत्स्य और पशु विज्ञान खंड की प्रगति समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की और परियोजना में विभिन्न संस्थानों द्वारा की गई प्रगति की समीक्षा की। आठ भाकृअनुप अनुसंधान संस्थान, पशु विज्ञान से चार (भाकृअनुप-भारतीय पशु



चिकित्सा अनुसंधान संस्थान भाकृअनुप-भारतीय बकरी अनुसंधान संस्थान, भाकृअनुप-भारतीय भैंस अनुसंधान संस्थान और भाकृअनुप-राष्ट्रीय पशु अनुवंशिक संसाधन ब्यूरो) और मत्स्य विज्ञान से चार (भाकृअनुप-केंद्रीय मीठा जल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भाकृअनुप-केंद्रीय खाराजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भाकृअनुप-राष्ट्रीय मत्स्य अनुवंशिक संसाधन ब्यूरो और और भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय

मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान) ने भाग लिया और वर्ष 2018-19 के लिए परियोजना में हुई प्रगति को प्रस्तुत किया। डॉ. एल. एम. भर, निदेशक, भाकृअनुप- भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, डॉ. अनिल राय, डिवीजन के प्रमुख और समन्वयक, कैबिन, भाकृअनुप- भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान और डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, समीक्षा बैठक में मौजूद थे और उन्होंने कैबिन योजना के तहत चल रहे परियोजनाओं में सुधार के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए।

संस्थान के सहायक कुशल कर्मचारी (एसएसएस) का अन्य भाकृअनुप संस्थानों में दो दिनों की शिक्षात्मक यात्रा

फील्ड एक्सपोजर यात्रा किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। एक्सपोजर विजिट के माध्यम से प्रशिक्षु खेत, खेत के साथ-साथ प्रयोगशालाओं में चल रही विभिन्न शोध गतिविधियों की झलक पा सकते हैं। प्रतिभागियों को अनुसंधान और विकास में नियोजित विभिन्न उपकरणों, और तकनीकों से भी अवगत कराया जाता है। कर्मचारियों को नए स्थानों और संस्थानों का दौरा करने का अवसर मिलता है जहां वे समकक्ष

लोगों से मिल सकते हैं और जानकारी का आदान-प्रदान कर सकते हैं।



यह संभावित रूप से एक प्रेरक कारक होता है और अपने कर्तव्यों को अधिक कुशलतापूर्वक और पेशेवर रूप से निर्वहन करने में उन्हें प्रेरणा दे सकता है। ऐसी यात्राओं का आयोजन कुशल सहायक कर्मचारियों के लिए और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि अतीत के विपरीत, इन कर्मचारियों की क्षमता निर्माण को अब अन्य श्रेणी के कर्मचारियों की तरह समान रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है।

इसे ध्यान में रखते हुए, भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के मुख्यालय के सत्ताईस कुशल सहायक कर्मचारीयों के लिए दो दिवसीय एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया। 16 जनवरी, 2019 को उन्होंने डॉ. एस.के.नाग, प्रधान वैज्ञानिक और नोडल अधिकारी, एचआरडी के मार्गदर्शन में भाकृअनुप-केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, कैनिंग सेंटर का दौरा किया। केंद्र पर पहुंचने पर, केंद्र प्रमुख डॉ.डी.बर्मन द्वारा कर्मचारियों का सौहार्दपूर्वक स्वागत किया गया। एक संक्षिप्त परिचय के बाद, डॉ. बर्मन ने जनादेश और वर्तमान में केंद्र द्वारा की जा रही विभिन्न शोध गतिविधियों के बारे में बताया। फिर उन्हें संग्रहालय, विभिन्न अनुसंधान क्षेत्रों, मौसम संबंधी वेधशाला आदि की यात्रा के लिए ले जाया गया। प्रतिभागी इन सब को देखने और जानने के लिए बहुत उत्साही और हर्षित थे।

19 जनवरी, 2019 को डॉ. अपर्णा रॉय, सह-नोडल अधिकारी, एचआरडी ने कुशल सहायक कर्मचारियों के लिए भाकृअनुप -राष्ट्रीय डेरी अनुसन्धान संस्थान, कल्याणी और भाकृअनुप -केंद्रीय मीठा जल जीवपालन संस्थान, कल्याणी की एक्सपोजर यात्रा की व्यवस्था की।

भाकृअनुप
-राष्ट्रीय
डेरी
अनुसन्धान
संस्थानमें,
दूध देने
वाली
मशीनों,



मवेशी यार्ड और चारा फार्म को देखकर कर्मचारी खुश थे। भाकृअनुप -राष्ट्रीय डेरी अनुसन्धान संस्थान एनडीआरआई के क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिक, डॉ. एमडी.आसिफ, कल्याणी ने केंद्र में किए गए कार्यों के बारे में जानकारी दी। भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के कर्मचारियों ने भाकृअनुप -राष्ट्रीय डेरी

अनुसन्धान संस्थान
के क्षेत्रीय केंद्र के
तकनीकी

अधिकारी के साथ
बातचीत की।
उसके पश्चात्
प्रतिभागियों को
मीठा जल
जीवपालन



संस्थान, के
कल्याणी क्षेत्रीय स्टेशन पर ले जाया गया। डॉ. पी.पी.चक्रवर्ती, केंद्र प्रभारी ने बताया कि स्टेशन द्वारा किस प्रकार के अनुसंधान और गतिविधियाँ की जाती हैं। उन्होंने एकीकृत मछली पालन के बारे में बताया और उन्हें अनुभवों के लिए खेत में ले गए। डॉ.चोट्टोपाध्याय, ने कैटिव तरीके से हिल्सा मछली पालन पर एक अवलोकन दिया। भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के कर्मचारी भाकृअनुप के अन्य संगठनों द्वारा किए गए कार्यों को देखने के लिए बहुत इच्छुक और उत्साहित थे। यात्रा के बाद, एक छोटी प्रतिक्रिया सत्र की व्यवस्था की गई थी। इन यात्राओं की व्यवस्था के लिए लगभग सभी ने अपनी संतुष्टि और खुशी व्यक्त की। उन्हें यह भी लगता है कि इस तरह की एक्सपोजर यात्राओं से उनके ज्ञान और कौशल में वृद्धि होगी।

दैनिक प्रयोग के लिए एमएस एक्सेल और पावर पॉइंट के उपयोग में क्षमता वृद्धि के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में 15-16 जनवरी, 2019 के दौरान "एमएस एक्सेल में क्षमता निर्माण और कौशल विकास के लिए पावर पॉइंट एप्लिकेशन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का

उद्देश्य प्रतिभागियों को प्रलेखन, डेटा संकलन, बुनियादी विश्लेषण



और
कुशल
तरीके से
संस्थागत
काम की
प्रस्तुति
और एक

व्यवस्थित तरीका प्रदान करना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर से कुल 18 प्रतिभागियों (4 महिलाएं और 14 पुरुष) तकनीकी अधिकारी (8 नं.) और प्रशासनिक कर्मचारियों (10 नं.) को शामिल किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम को तकनीकी और प्रशासनिक अधिकारियों के कौशल को उन्नत करने और कंप्यूटर अनुप्रयोगों जैसे कि माइक्रोसॉफ्ट



एक्सेल और पावर पॉइंट प्रस्तुति से परिचित कराने के लिए तैयार किया गया था। 15 जनवरी 2019 को उद्घाटन समारोह के बाद प्रतिभागियों के पंजीकरण के साथ प्रशिक्षण शुरू किया गया था। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक व्याख्यान के साथ एक्सेल और पावर पॉइंट में व्यावहारिक रूप से अभ्यास किया गया। इन दो दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान एक्सेल और उसके अनुप्रयोगों, गणितीय योगों और ग्राफिक्स, पावर पॉइंट बेसिक्स और इसकी कार्य सुविधाओं जैसे विषयों पर व्याख्यान दिए गए। कार्यक्रम का समापन निदेशक डॉ.बसन्त कुमार दास द्वारा प्रतिभागियों को मान्यता पत्र वितरण के साथ किया गया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. रोहन कुमार रमन ने किया।

केरल बैकवॉर्ट्स में सीपी मछुआरों के लिए स्थिति अनुसार जलवायु तकनीक के रूप में पेन कल्चर का सफल प्रदर्शन

निकरा परियोजना के तहत भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 17 जनवरी, 2019 को केरल राज्य के अलाप्पुझा जिले के थायकट्टूसरी गांव में स्थापित पेन में काले सीपी

विलोरिता साइप्रिनोइड्स की सफलतापूर्वक पकड़ का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 1. थायकटूसरी ब्लैक क्लैम इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव सोसायटी के पचास मछुआरों और इसके बोर्ड के सदस्य ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. उत्तम कुमार सरकार,



विभागाध्यक्ष, जलाशय और अद्रच्छेत्र मत्स्य प्रभाग द्वारा किया गया था। मछुआरों को संबोधित करते हुए उन्होंने एक पेनसिल्वेनिक तकनीक के रूप में पेन कल्चर के महत्व पर प्रकाश डाला और इसे कार्बन ब्लू में बदलकर कार्बन उत्सर्जन कम करने में सीपी कल्चर की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने अतिरिक्त राजस्व और आजीविका के लिए इन प्रणालियों से उत्पादन बढ़ाने के लिए बहु-ट्राफिक कल्चर प्रणाली की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।



डॉ. थैकम थैसा पॉल पॉल ने मछुआरों का स्वागत किया और केरल के थाइकैटस नर्सरी में स्थापित संरचना के फायदों पर विस्तार से जानकारी दी। बांस और एचडीपीई नेट से बना प्रायोगिक पेन 114 वर्गमीटर का था

डॉ. थैकम थैसा पॉल पॉल ने मछुआरों का स्वागत किया और केरल के थाइकैटस नर्सरी में स्थापित संरचना के फायदों पर विस्तार से जानकारी दी। बांस और एचडीपीई नेट से बना प्रायोगिक पेन 114 वर्गमीटर का था

डॉ. थैकम थैसा पॉल पॉल ने मछुआरों का स्वागत किया और केरल के थाइकैटस नर्सरी में स्थापित संरचना के फायदों पर विस्तार से जानकारी दी। बांस और एचडीपीई नेट से बना प्रायोगिक पेन 114 वर्गमीटर का था



और इसे दो डिब्बों में विभाजित किया गया था। जंगली (पाथिरमन्नल) से एकत्र किए गए बीजों को क्रमशः छोटे क्लैम (औसत आकार 15 मिमी

और औसत वजन 1.46 ग्राम) और बड़े क्लैम (22 मिमी की औसत लंबाई और 3.54 ग्राम का औसत वजन) से अलग किया गया था। छोटे और बड़े क्लैम क्रमशः 5000 नग / वर्गमीटर और 2000 नग / वर्गमीटर की दर से स्टॉक किए गए थे। एक वर्ष की अवधि के लिए कुल 650 किलोग्राम छोटे क्लैम को पेन में संस्कारित किया गया। सीपियों की वार्षिक वृद्धि दर का आकलन लंबाई और वजन के रूप में 14.23 मिमी / वर्ष और 47.98 जी / वर्ष के रूप में किया गया था। कार्यक्रम में महिला क्लैम कलेक्टरों की मदद से सीपी को उसके कवच से अलग करना भी शामिल था। मांस और खोल को अलग कर दिया गया, धोया गया और क्लैम मांस और क्लैम कवच को ₹26300 में बेचा गया। श्री जी. कुबेरन, श्री एस. मनोहरन (मुख्य तकनीकी अधिकारी) और श्री पी.वी.शाजिल (कुशल सहायक कर्मचारी) ने क्लैम कटाई के साथ-साथ हितधारकों की बैठक की व्यवस्था करके सभी तकनीकी सहायता दी। श्री एस. मनोहरन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संस्थान के महिला प्रकोष्ठ की बैठक

संस्थान मुख्यालय की सभी महिला सदस्यों की एक बैठक 21 जनवरी, 2019 को संस्थान मुख्यालय में आयोजित की गई। बैठक संस्थान के



महिला प्रकोष्ठ और महिला शिकायत प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई और बैठक की अध्यक्षता संस्थान के

निदेशक डॉ. बी.के.दास ने की। संस्थान में कुल 57 महिला कर्मचारी हैं, जो संस्थान की कुल ताकत (स्थिति में कर्मचारी) का 24% है। बैठक में शोध छात्रा और संविदा कर्मचारी सहित कुल 44 महिला कर्मचारी उपस्थित थीं। बैठक की शुरुआत महिला शिकायत प्रकोष्ठ की अध्यक्ष डॉ. अपर्णा रॉय के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने महिला प्रकोष्ठ और महिला शिकायत प्रकोष्ठ की भूमिका और जिम्मेदारियों के बारे में नए शामिल महिला कर्मचारियों को जागरूक किया। निदेशक ने अपने संबोधन में उल्लेख किया कि ये दोनों प्रकोष्ठ संस्थान में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखने के लिए हैं और महिलाओं को अपने काम को गरिमा और आश्वासन के साथ आगे बढ़ाने में सक्षम बनाती हैं। सभी महिला कर्मचारीयों ने संस्थान में काम के माहौल के बारे में अपनी संतुष्टि व्यक्त की। बैठक का समापन महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष डॉ. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।



अध्यक्ष डॉ. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम

पश्चिम बंगाल के सुंदरवन के 42 मछुआरों और महिला मछुआरों के लिए एक कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में 21-23 जनवरी, 2019 के दौरान "आजीविका सुधार के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" विषय पर किया गया। यह कार्यक्रम सीएसएस ब्लू रेवोल्यूशन स्कीम के तहत राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, हैदराबाद, सरकार द्वारा प्रायोजित था। प्रशिक्षु मछुआरों की जरूरतों के आधार पर प्रशिक्षण का आयोजन किया



गया था क्योंकि सुंदरवन में विशाल जल संसाधन है जिसमें कई कम - उपयोग में आने वाली नहरें शामिल हैं जो मत्स्य पालन बढ़ाने और प्रबंधन के लिए जबरदस्त क्षमता रखती हैं। इस क्षेत्र के कई घरों में तालाब हैं और अनेक महिलाएँ मछली पकड़ने की गतिविधियों में सीधे सीधे भाग लेती हैं। इसलिए, इस कार्यक्रम में अधिकांश महिला प्रशिक्षु शामिल थी। प्रशिक्षुओं को मत्स्य पालन और अन्य आजीविका के अवसरों जैसे मिश्रित मछली कल्चर, मोनो-सेक्स तिलेपिया कल्चर, मछली चारा और चारा प्रबंधन, रोग प्रबंधन आदि के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया था। भाकृअनुप - राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान



संस्थान, और भाकृअनुप -केंद्रीय मीठा जल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, जैसे अनुसंधान के कल्याणी केन्द्रों में प्रशिक्षुओं के लिए एक क्षेत्र प्रदर्शन यात्रा की भी व्यवस्था की गई थी। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षुओं की प्रतिक्रिया और एक औपचारिक वैध सत्र के साथ समाप्त हुआ। प्रशिक्षुओं ने संबन्धित अधिकारियों के साथ बातचीत की और अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किया। उनसे यह भी अनुरोध किया गया कि

वे अपने क्षेत्र के अन्य मछुआरों के बीच प्रशिक्षण कार्यक्रम से मिले अपने ज्ञान का प्रसार करें। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रशिक्षुओं को नए आय सृजन और आय में वृद्धि के नए अवसर मिलने की उम्मीद है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अपर्णा राय, डॉ. सजीना ए. एम, सुश्री प्रीतिज्योति माझी और सुश्री सुकन्या सोम वैज्ञानिक, द्वारा किया गया था।

जनजातीय उप योजना के तहत कर्नाटक के हरंगी जलाशय में पेन द्वारा मत्स्य पालन का प्रदर्शन

भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के अनुसंधान केंद्र, बैंगलोर ने आदिवासी उप योजना (टीएसपी) के तहत 24 जनवरी

2019 को आदिवासी मछुआरों के लिए कर्नाटक के हरंगी जलाशय, कर्नाटक में



अनुकूलिकाओं विकसित के लिए पेन कल्चर में प्रदर्शन कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया। सीआईएफआरआई एचडीपीई पेन की स्थापना, बीज संचयन, पूर्व और पश्चिम संचयन प्रबंधन और चारा प्रबंधन के प्रदर्शन पर एक बड़े पैमाने पर जागरूकता कार्यक्रम मछुआरों के लिए किया आयोजित गया था। जलाशय में कैटला कैटला और लेवीओ रोहिता प्रजातियाँ संचयित की गई थी। मुख्य रूप से जीरा के लिए, हरंगी जलाशय में स्थापित पेन संरचना (0.1 हेक्टेयर), कर्नाटक में अपनी तरह का पहला प्रयोग है। जब वे लगभग 100 मिमी का आकार प्राप्त करते हैं, तो जलाशय को संचयित करने के लिए उपयोग किया जाता है। कावेरी मछुआरे सहकारी समिति के लगभग 80 मछुआरों ने



प्रदर्शन कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम में मत्स्य विभाग, कर्नाटक, भारत सरकार के अधिकारियों ने भाग लिया। डॉ. प्रीता

पणिक्कर, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी अधिकारी ने सभा का स्वागत किया और जलाशय पर स्थापित पेन संरचना के फायदों पर बात की और मछली पकड़ने पर निर्भर आदिवासियों की आजीविका में सुधार के लिए इन जल निकायों से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए इसकी प्रासंगिकता

पर बात की। सुश्री वी. एल. राम्या, वैज्ञानिक श्री विजयकुमार (वरिष्ठ तकनीकी सहायक) ने सहयोगी कर्मचारियों के साथ कार्यक्रम के सुचारु संचालन के लिए सभी आवश्यक प्रबंध किए। श्री विजयकुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया और भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास का उनके द्वारा दिए गए समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया।

फरका, पश्चिम बंगाल में पहले हिल्सा केंद्र की स्थापना

माननीय, श्री बाबुल सुप्रियो भारी उद्योग और सार्वजनिक उद्यम राज्य मंत्री भारत सरकार, ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अन्तर्गत, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के द्वारा फरका में स्थापित हिल्सा रेंचिंग स्टेशन का उद्घाटन, 24 जनवरी 2019 को किया। इस अवसर पर डॉ. बसन्त कुमार दास निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और अन्य सरकारी महकमों जैसे कि फरका बैराज प्राधिकरण (FBA), भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI), केंद्रीय जल आयोग (CWC) आदि के प्रशासनिक और प्रबंधन कर्मी और मछुआरा समाजों के प्रतिनिधियों सहित नमामि परियोजना से सम्बन्धित शोध छात्र एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे। यह हिल्सा केंद्र भारत में अपनी तरह का पहला केंद्र है, जिसमें गंगा नदी के ऊपरी हिस्सों में हिल्सा बहाली और संचन बढ़ाने पर प्रमुख ध्यान दिया जायगा। स्टेशन की कल्पना नमामि गंगे परियोजना द्वारा वित्त पोषित, गंगा नदी में हिल्सा की आबादी पर किए

हासिल कर लिया जायगा। केंद्र के भ्रमण और चर्चा के दौरान, माननीय मंत्री ने गंगा नदी में हिल्सा किशोरियों प्रवाहित किये जाने से पहले के



पालन के लिए उपयुक्त स्थानों पर अस्थायी पिंजरे स्थापित करने का सुझाव दिया।

मत्स्य विज्ञान के स्नातक छात्रों का "स्टूडेंट रेडी" कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण

भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने पश्चिम बंगाल प्राणी एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय कोलकाता के 30 स्नातक छात्रों के लिए 'ऑन-कैंपस' प्रशिक्षण का आयोजन 28-31 जनवरी, 2019 के दौरान संस्थान के बैरकपुर मुख्यालय में किया। यह "स्टूडेंट रेडी प्रोग्राम" मत्स्य पालन कार्य अनुभव कार्यक्रम के तहत मत्स्य विज्ञान के स्नातक छात्रों के लिए एक कोर्स पाठ्यक्रम है। प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि-विज्ञान के माध्यम से उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने और युवाओं में आजीविका के साधन के रूप में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया था। कार्यक्रम एक संरचित तरीके से आयोजित किया गया था। छात्रों के लिए प्रयोगशाला सत्रों एवं कक्षा सत्रों की व्यवस्था की गई थी। संस्थान के अनुसंधान क्षेत्रों के



गए एक छोटे अध्ययन के आधार पर की गई थी। अध्ययन ने संकेत दिया कि गंगा नदी के ऊपरी हिस्से में हिल्सा की आबादी में गिरावट का प्रमुख कारण प्रवासन विफलता है। हालांकि भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने गंगा नदी के ऊपरी हिस्से में हिल्सा सुधार के लिए विभिन्न संभावनाओं पर ध्यान दिया है, हिल्सा की रेंचिंग को प्रमुख हस्तक्षेप रणनीतियों में से एक पाया गया। डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने विशिष्ट अधिकारियों की सभा को संक्षेप में हिल्सा रेंचिंग परियोजना की उत्पत्ति, उद्देश्यों और अब तक की प्रगति से अवगत कराया। डॉ. दास ने बताया कि गंगा नदी में फरका बैराज के अपस्ट्रीम पर स्टेशन से औसतन लंबाई 255 मिमी और औसत वजन 165 ग्राम की कुल 117 हिल्सा मछलियों को प्रवाहित किया है और यह भी आश्वासन दिया कि निर्धारित समय सीमा में परियोजना के लक्ष्य को



विभागाध्यक्ष और विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिलवाया गया। चार दिनों का प्रशिक्षण एक मूल्यांकन सत्र के साथ समाप्त हुआ जो कि डॉ. बी.के. बेहरा, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी, परियोजना निगरानी मूल्यांकन भाकृअनुप केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा किया गया था।

बैठक

संस्थान ने दामोदर घाटी निगम कोलकाता के अतिरिक्त निदेशक, के साथ दिनांक 04 जनवरी 2019 को पश्चिम बंगाल के मैथन जलाशय में घेरे में मछली पालन सम्बन्धी विषय पर विस्तृत चर्चा हेतु बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 11 जनवरी 2019 को एनएफडीबी, हैदराबाद में आयोजित एनएफडीबी और बीओबीपी परियोजना प्रस्तावों पर मत्स्य सूचना पर हुई बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार के मात्स्यिकी विभाग के अधिकारियों के साथ पिंजरे में मछली पालन हेतु स्थल चयन के लिए और पिंजरा लगाने की व्यवहार्यता के अध्ययन के लिए दिनांक 17 जनवरी 2019 को त्रिपुरा का भ्रमण/ दौरा किया।

संस्थान के निदेशक ने समुद्री और अंतर्स्थलीय मछली प्रसंस्करण सम्मेलन, कृषि ओडिशा 2019 में दिनांक 18 जनवरी, 2019 को बीजू पटनायक प्रदर्शनी मैदान, भुवनेश्वर में भाग लिया।

संस्थान के निदेशक ने ओडिशा में खुले जल मत्स्य विकास के बारे में मत्स्य विभाग, ओडिशा के सचिव के साथ एक बैठक की।

संस्थान के निदेशक ने 22 जनवरी 2019 को ओडिशा के आरएमआरसी, भुवनेश्वर में चलित परियोजना सम्बन्धी बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने जनजाति उप योजना के तहत स्थानीय गैर सरकारी संगठन "सुंदरबन ड्रीम" के सहयोग से गोसाबा ब्लॉक, सुंदरबन, पश्चिम बंगाल के 5 जनवरी, 2019 को आमतोली और दिनांक 6 जनवरी, 2019 को कोचुखली में नहर मत्स्य विकास पर दो जन जागरूकता शिविर आयोजित किए।

संस्थान ने ओडिशा के 55 मत्स्य किसानों के लिए 9 जनवरी 2019 को ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के 2 संकायों में ओरिएंटेशन ट्रेनिंग का आयोजन किया और प्रशिक्षकों को मत्स्य आहार, आहार: तैयार करने हेतु मिल तथा प्रयोगशाला भ्रमण, व्याख्यान सहित अन्य गतिविधियों से अवगत कराया गया।

संस्थान ने दिनांक 15-16 जनवरी, 2019 को कॉलेज ऑफ फिशरीज, सीएयू, लिम्बुचेरा, त्रिपुरा में "क्लाइमेट स्मार्ट एक्वाकल्चर एंड फिशरीज (सीएसएएफ)" पर 31 वीं ऑल इंडिया कांग्रेस ऑफ जूलॉजी (31वीं AICZ) और राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

संस्थान के क्षेत्रीय स्टेशन, कोच्चि ने दिनांक 17 जनवरी 2019 को एनआईसीआरए परियोजना के तहत वेम्बनाडले, केरल में क्लैम कटाई और हितधारकों की बैठक आयोजित की।

संस्थान ने दिनांक 21-23 जनवरी 2019 को पश्चिम बंगाल के सुंदरबन क्षेत्र के 42 मछुआरों और महिला मछुआरों के लिए "आजीविका सुधार के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

पश्चिम बंगाल में प्रायोजित संस्थान परियोजना, "नमामि गंगे" के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों के बारे में दिनांक 23-30 दिसंबर 2018 को सुंदरबन कृष्ण मेला प्रदर्शनी, कुल्दी में प्रदर्शनों के माध्यम से गंगा नदी की पुनर्स्थापना के लिए भारत सरकार के नमामि गंगे कार्यक्रम के बारे में 15000 से अधिक आगंतुकों को जानकारी दे गई।

संस्थान ने दिनांक 28-31 दिसंबर, 2018 के दौरान सरगाछी में राम कृष्ण मिशन, सरगाछी, मुर्शिदाबाद के तहत धान्यगंगा कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 15-16 जनवरी, 2019 को 31वें अखिल भारतीय कांग्रेस जूलॉजी के दौरान लिम्बुचेरा, अगरतला, त्रिपुरा में आयोजित एक प्रदर्शनी में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 18-22 जनवरी, 2019 को गुजरात के गांधीनगर में वाइब्रेंट गुजरात 2019 ग्लोबल ट्रेड शो के अवसर पर भाग लिया।

सेवानिवृत्ति



इस माह संस्थान से श्री सपन कुमार दास, टाइम कीपर संस्थान के मुख्यालय से सेवानिवृत्त हुए। श्री दास ने अपने कार्य काल में अपने कार्य को पूरी निष्ठा से अंजाम दिया श्री दास का विदाई समारोह का आयोजन मनोरंजन क्लब के द्वारा किया गया। सभी वैज्ञानिकों ने विदाई समारोह पर श्री सपन दास के कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की और उनके द्वारा

खेल कूद प्रतियोगिताओं में उनके योगदान को याद किया।

सम्पादक मंडल की तरफ से

सिफरी मासिक समाचार के सभी पाठकों को सम्पादक मंडल की तरफ से गणतंत्र दिवस की हार्दिक सुभकामनायें।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कासिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्था, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल: director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in